एक शिक्षक जिसके सारे छात्रों को नोबेल मिला

नवनीत कुमार गुप्ता

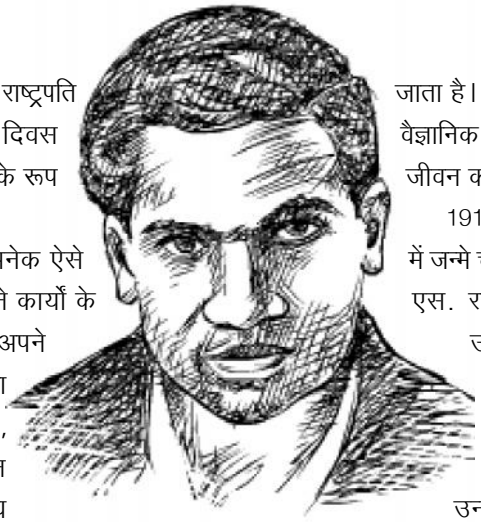

महान दार्शनिक एवं भारत के प्रथम राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन का जन्म दिवस 5 सितम्बर प्रति वर्ष शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

भारतीय विज्ञान जगत में भी अनेक ऐसे वैज्ञानिक हुए हैं जिन्होंने स्वयं अपने कार्यों के साथ-साथ विज्ञान की विरासत को अपने शिष्यों तक पहुंचा कर दुनिया का भला किया। प्रफुल्ल चन्द्र राय, सीवी रामन, जगदीशचन्द्र बोस, के.एस. कृष्णन सहित अनेक नामों के साथ गुरु शिष्य की विशिष्ट परंपरा रही है। इसी परंपरा में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित भारतीय वैज्ञानिक एस. चन्द्रशेखर भी शामिल हैं। वे ऐसे अकेले प्रोफेसर थे जिनकी पूरी कक्षा को ही नोबेल पुरस्कार मिला। ये घटना पूरी दुनिया के वैज्ञानिकों में बेहद लोकप्रिय है।

कहानी यह है कि एक दिन शिकैगो में ज़बर्दस्त तूफान आया। सड़क पर कोई भी चल-फिर नहीं रहा था। लेकिन चन्द्रशेखर को करीब 80 किलोमीटर दूर अपनी कक्षा लेने जाना था। तमाम मुश्किलों के बावजूद विज्ञान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के कारण वे गाड़ी चलाकर कक्षा तक गए। उस दिन तूफान के कारण केवल दो विद्यार्थी ही आए थे - संग दाओ ली और चैन निंग यांग। ली और यांग, दोनों को ही फिज़िक्स में नोबेल पुरस्कार मिला। इस प्रकार यह घटना आगे चलकर इतिहास बन गई।

एस. चन्द्रशेखर के कार्यों का महत्व इस बात से बखूबी समझ में आता है कि स्टीफन हॉकिंग ने अपनी किताब ए *ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम* में उनका नाम एक दर्जन से ज़्यादा बार लिया है। चन्द्रशेखर का व्यक्तित्व इतना शानदार था कि वे जिससे भी मिले, उसी पर अपनी अमिट छाप छोड़ दी। भारतीय वैज्ञानिकों में भी उनका बहुत सम्मान किया जाता है। उनकी मृत्यु के बाद भी भारतीय वैज्ञानिक समुदाय उनके कार्यों और उनके जीवन की प्रशंसा करना नहीं भूलता।

1910 में लाहौर में एक तमिल परिवार में जन्मे चन्द्रशेखर महान भारतीय गणितज्ञ एस. रामानुजन की गणित से जुड़ी उपलब्धियों से कॉलेज के दिनों से पहले से ही प्रेरित थे। जब वे दस वर्ष के थे तब इसका उन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उनकी मां ने अखबार में रामानुजन की मृत्यु के बारे में पढ़ा और उन्हें बताया कि एक बहुत बड़े हिन्दुस्तानी गाणितज्ञ की मृत्यु हो गई है। उस दिन से वह रामानुजन को अपना आदर्श और गुरु मानने लगे।

चन्द्रशेखर गणित के क्षेत्र में ही और आगे बढ़ना चाहते थे। पिता चाहते थे कि वे सरकारी कर्मचारी बनें और इसमें गणित से कोई मदद नहीं मिलेगी। मां सीतालक्ष्मी चन्द्रशेखर का समर्थन करती थीं क्योंकि उनका मानना था कि जिस काम में किसी की रुचि होती है, उसे ही वह अच्छे ढंग से करता है।

लेकिन आखिरकार चन्द्रशेखर ने अपने पिता की इच्छा का मान रखते हुए भौतिकी को चुना। चन्द्रशेखर के रिश्ते के एक चाचा सी. वी. रामन नोबेल पुरस्कार से सम्मानित थे। लिहाज़ा चन्द्रशेखर के पिता इस बात से बहुत खुश थे। 31 जुलाई 1930 को इंग्लैंड की अपनी पहली यात्रा के लिए चन्द्रशेखर मुम्बई से जहाज़ पर सवार हुए। वहां वे अपना समय शिपबोर्ड पर श्वेत वामन तारों में डीजनरेट इलेक्ट्रॉन की सांख्यिकीय गणना करते बिताते थे। उनकी खोज को चन्द्रशेखर लिमिट नाम दिया गया। सिर्फ 19 साल की उम्र में ही उन्होंने यह खोज कर ली थी, जिसके लिए बाद में उन्हें नोबेल पुरस्कार से नवाज़ा गया है। ***(स्रोत फीचर्स)***